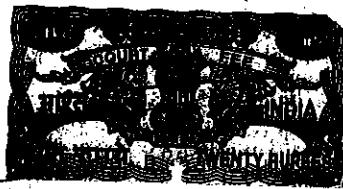


Rs. 30/-

(118)

न्यायालय श्रीमान् राजस्व मंडल मोप्रग्वालियर सर्किट कोर्ट रीवा

(मोप्र०)



III पुनर्विलोकन | रीवा | मोप्र २०१७ | २२६८

महेन्द्र प्रसाद मिश्र पिता स्व०श्री देवीदीन उम्र ६१ साल निवासी ग्राम \*

अधिन्याय श्रीमान् राजस्व मंडल मोप्रग्वालियर सर्किट कोर्ट रीवा मोप्र० भलुहा, तहसील रायपुर कर्चु०, जिला रीवा मोप्र०

.....आवेदक/निगरानीकर्ता

बनाम

राजस्व मंडल मोप्रग्वालियर सर्किट कोर्ट रीवा मोप्र० राकेश कुमार पिता स्व०केशव प्रसाद निवासी ग्राम भलुहा, तहसील रायपुर कर्चु०, जिला रीवा मोप्र०

.....अनावेदक/गौर निगरानीकर्ता

पुनर्विलोकन आवेदन पत्र बिरुद्ध माननीय  
राजस्व मंडल मध्यप्रदेश ग्वालियर के  
प्र०क० ०३३०९-दो/२०१२ आदेश दिनांक २७.६.

2017

अन्तर्गत धारा ५१मोप्र०भ००रा०सं०सन०१९५९ई.

मान्यवर,

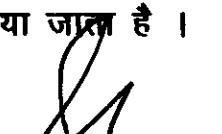
पुनर्विलोकन आवेदन पत्र के आधार निम्न हैं:-

- यह कि माननीय न्यायालय मे श्रीमान अपर जिलाध्यक्ष महोदय के प्र०क० १६ए७४/०६-०७ आदेश दिनांक २४.८.२००९ एवं निगरानी प्र०क० १२९/निगरानी/२००९-२०१० आदेश दिनांक २९.८.२०१२ न्यायालय श्रीमान अपर आयुक्त महोदय रीवा संभाग रीवा के बिरुद्ध निगरानी प्रस्तुत की गयी थी, उक्त प्रस्तुत निगरानी मे माननीय न्यायालय द्वारा अपर कलेक्टर के आदेश दिनांक २४.८.२००९ को मूल आदेश मानकर निगरानी दायर मानकर निरस्त की गई है तथा माना गया है कि अपर कलेक्टर के आदेश के बिरुद्ध अपील होनी चाहिये, इसलिये प्रस्तुत निगरानी निरस्त की गयी है। इसके लिये यह स्पष्ट किया जा रहा है, अपर कलेक्टर रीवा का मूल आदेश

भारतीय

**राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर**  
**आवृत्ति आदेश पृष्ठ**

**III / पुनर्विलोकन / रीवा / भू.रा./ 2017 / 2268**

| स्थान तथा दिनांक | कार्यवाही तथा आदेश  | पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर |
|------------------|---|--|
| १५-९-२०१७        | <p>आवेदक के विद्वान अभिभाषक को ग्राहयता के बिन्दु पर सुना गया। आवेदक द्वारा यह पुनर्विलोकन आवेदन इस न्यायालय के आदेश दिनांक 27-6-2017 के विरुद्ध प्रस्तुत किया गया है। प्रकरण का अवलोकन किया। म0 प्र0 भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 51 सहपठित व्यवहार प्रक्रिया संहिता के आदेश 47 नियम 1 में पुनर्विलोकन हेतु निम्नलिखित आधारों का उल्लेख किया गया है:-</p> <p>1 किसी नई और महत्वपूर्ण बात या साक्ष्य का पता चलना जो सम्यक् तत्परता के पश्चात भी उस समय जब आदेश किया गया था, उस पक्षकार के ज्ञान में नहीं थी अथवा उसके द्वारा पेश नहीं की जा सकती थी, या</p> <p>2 मामले के अभिलेख से ही प्रकट कोई भूल या गलती, या</p> <p>3 कोई अन्य पर्याप्त कारण</p> <p>आवेदक की ओर से पुनर्विलोकन आवेदन पत्र में ऐसी कोई बात अथवा साक्ष्य नहीं दर्शायी गयी है, जो आदेश पारित करते समय उसकी जानकारी में नहीं थी, अथवा प्रस्तुत नहीं की जा सकती थी। अभिलेख से परिलक्षित कोई त्रुटि भी नहीं दर्शाई गई है, केवल इस न्यायालय द्वारा निकाले गये निष्कर्षों में त्रुटि बतलाने का प्रयास किया गया है, जो पुनर्विलोकन का आधार नहीं है।</p> <p>2/ उपरोक्त विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में यह पुनर्विलोकन प्रथमदृष्ट्या आधारहीन होने से अग्राह्य किया जाता है।</p>  <p style="text-align: center;">(एस0एस0 अली)<br/>सदस्य</p> |  |